International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.9 Issue.4 Mar–April- 2022

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी गजल

डॉ. मृणाल शिवाजीराव गोरे
हिंदी विभाग, अंबाजोगाई
Email:mrunalgore36@gmail.com

सार

हिंदी कविता मे गजल के बी काज बोने का ऐतिहासिक दायित्व अमीर खुसरो ने निभाया है! उन्हे हिंदी गजल का जनक कहा जाये तो इसमें कोई दोहराय नही! अमिर खुसरो ने हिंदी गजल एक ऐसा पथ निर्माण किया जिस पर से आगे कोई गजलकार सहजता से आगे बडणे चले गये! अमीर खुसरो के पश्चात गजल लिखने का प्रयास कबीर. गिरध दास. प्यारेलाल शोकी जीने किया! हिंदी गजल विकास मे भारत न्दुडू हरिश्चंद्र बदरीनाथ लाल चौधरी, प्रेम घन, प्रताप नारायण मिश्रा आयोध्या सिंह उपाध्याय, हरीऔंध, नथुराम शर्मा, शंकर लाला भगवानदीन यादी का विशेष योगदान है। हिंदी साहित्य के राष्ट्रकवी के रूप में परिचित मैथिलीशरन गुप्त जी ने अपने रचनाओं मे मानवतावादी विचारो को पिरोया है अपने काव्य द्वारा लोगो मे राष्ट्रप्रेम जगाने का प्रयास किया है। गुप्ता जी के कुछ गीत हमें गजल शैली में दिखाई देते हैं जो यहाँ दृष्टव्य है -

"इस देश को हाय दीन बंन्धो!
आप फिर अपनाइये भगवान भारत वर्ष को तो फिर पुण्यभूमि बनाइये
जड तुल्य जीवन आज इस का विघ्न बाधा पूर्ण है
रे रम्ब! अब अवलंब देकर विघ्नहर कहलाये!"1

रामप्रसाद बिस्मिल स्वाधीनता संग्राम मे स्वतंत्रता सैनानियों में क्रांती की आग फुंकने का कार्य करते दिखाये देते है। उनके अनेक गजलो ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ आवाज बुलंद की है। हिंदी तथा उर्दू शब्द वली के मिश्रितं रूप में उनकी गजले तत्कालिन परिवेश को प्रभावित करने में सक्षम साबीत होती है। प्रस्तुत उदाहरण देखें जिसमें बिस्मिल्ला जी वतन के आजादी के लिये खुशी खुशी फाँसी चढंने के लिए राजी होने की भावना व्यक्त करते हैं –

"खुली है मुझको लेने के, लिए आगोश आजादी
खुशी की हो गया महबूब का दीदार फाँसी से
यहाँ तक सरफरोशाँने वतन बढ जायेंगे फाँसी से
कि लटकाने पडेगे नित तुझे दो चार फाँसी से ।"2

इसी प्रकार के राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत गजले गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' द्वारा लिखित है जो अपने समय के माँग के अनुरुप स्वराज्य देश प्रेम एंव क्रांती के स्वर को मुखरित करती है! इसी काल में जगदंबा प्रसाद मिश्रा 'हितोषी' की प्रस्तुत गजल देखें जिसने अंग्रेजो की चुले हिलाकर रख दी! उन्होंने देश के सैनिकों

में भारत माता के प्रति आगाध देशप्रेम का संचार कराती भावनाओं को उत्पन्न किया है। अपना देश, अपना आसमा, अपनी जमीं जैसी स्वदेश प्रेम की आत्मीयता उनके गजल में देखे -

"इलाही वह भी दिन होगा, जब अपना राज देखेंगे
जब अपनी ही जमीं होंगी जब अपना आसमाँ होगा
शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा!"3

द्विवेदी युग के बाद छायावाद के समय सीमा (सन1918-1936 तक) स्वीकृत की जाती है। इसी दौरान देश में सहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन उभरे द्वैध इनके तहत अंग्रेजी प्रशासन को मुष्कील में डालना चाहा। सन 1919 का अधिनियम शासन पद्धती'1931का इंडियन प्रेस इमर्जन्सी ऍक्ट, जालियनवाला बाग हत्याकांड -1919 यादी जुलमी कानुनों तथा कार्यप्रणाली कों ललकारा गया। स्वाभाविक रूप मे तत्कालीन समाज स्थितियों का आसर छायावादी साहित्य कारों पर हो होना लाजीमी था –

"राष्ट्र-मुक्ती-आंदोलन का स्वर छायावादी साहित्य की समूची सर्जन में है जो कभी मध्दिम होता नहीं दिखाता। इस काल के रचनाकारों ने राष्ट्र के स्वाधीनता के पक्ष में और औपनिवेशिक दासता के विरोध में जो कुछ लिखा, वह स्वाधीनता व साहित्य मे गाढें अक्षरों में लिखा गया!"4

छायावाद युगिन गजलो में स्वाधीनता का स्वर प्रसाद और निराला की लेखनी से और अधिक प्रखरता से उभरता है! जयशंकर प्रसाद की गजलों के कई शेर इस बात का प्रमाण है। इन गजलकारोंने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हे स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा बनने हेतू प्रेरित किया। अंग्रेज राज में भारतीय व्यापार चौपट हो गया। धन विदेश अर्थात इंग्लंड चले जाने के कारण भारत का दिवाला निकल रहा था अकाल, महामारी, भुखमारी के लिए अंग्रेजी शासन को जिम्मेदारी मानते हुए गजलकारोंने तिखे शब्दो में प्रहार किया है। अँग्रेजो द्वारा अपने शोषण का चक्र जारी रखना तथा भारतियों को मुर्ख बनाकर कर लुट की व्यापार निति अपनाता इस भेदभाव एवं वैषम्य को उकेरते हुए जय शंकर प्रसाद की निम्न गजल युवाक को स्वाधीनता के प्रति कार्यरत होने के लिए प्रोत्साहित करती है। जो यहाँ अधोरेखित करनी अनिवार्य होगी-

"देश की दुर्दशा निहारोगे
डूबते को कभी उबारोगे
हारते की रहे न है कुछ अब
दाँव पर आपको नही हारोगे
कुछ करोगे कि बस सदा रोकर
दीन को देव को पुकारोंगे
सो रहे तुम भाग्य सोता है
आप बिगडी तुम्ही सँवारोंगे
दीन जीवन बिता रहे अब तक

क्या हुए जा रहे विचारोगे।"5

अंग्रेजो ने भारत में हमेशा से फुट को संरक्षण दिया ताकि भारतीय आपस में संघर्ष करते रहे और अंग्रेजी मजे से शासन तत्कालीन समाज की जरुरत थी की युवकों को सचेत करें। देश प्रेम के प्रति आकर्षित करे। इसी जरुरत कों समझते हुए 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' जिने क्रियाशीलता का महत्व समझते तथा देश के लिये बलिदान करने से न घबराने तथा अपने कार्य के प्रति तत्पर रहना सिखाते हैं। इसी संदर्भ की उनके गजल के कुछ शेर दृष्यव्य है –

"राह पर बैठे है, उन्हें आबाद तू जब तक न कर
चैन मत ले, गैर को बर्बाद तु जब तक न कर
पैर रह कजा के हाथ जब तक चलता है
बैठने मत दे किसी को, याद तू जब तक ने कर" 6

"अगर तू दुर से पीछे हट गया तो काम रहने दे
अगर बढाना है अदि की और तो आराम रहने दे
बिगडकर बनते और बनकर बिगडते एक युग बिता
परी और शाम रहने दे, शराब और जाम रहने दे"7

छायावोदात्तर युग में रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' की निम्न गजल देखे जो अंग्रेजो के शोषण के चक्की में पिसते आम लोग सत्ताधीशो एवं अफसरशाहीके समर्थकों को खुश हाल देख कर कवी का निष्पक्ष अपनी गजल के माध्यम से तत्कालीन राजनीति प्रहार करते है-

"आज उन्हींके जलवे सायों को जीवित करते हैं,
स्याह अंधेरों की साजिश में दिन का जादू भरते हैं।
नाम इसी का है खुशहाली तो फिर भुख गरिबी क्या,
होकर भी आजाद हिरासत की हम ख्वाहिश करते है ।"8

संक्षेप में, स्वाधीनता संग्राम में गजल विधा ने अपना सशक्त योगदान दिया है। जिससे अँग्रेजो की सरकारी अन्याय जनक नितियाँ, अमानुष कानून, अधिकार का हनन आदी को गजलो ने प्रकाश मे लाया है तथा भारत माता के प्रति समर्पण, त्याग वनाओं से ओतप्रोत गजले लिखी गई। एक और समाज को जागृत करना तथा दुसरी और अंग्रेजो को अपनी गलत कार्यपद्धतियोंसे अवगत करना प्रमुख कार्य स्वाधीनता आंदोलन की हिंदी गजलें करती है।

संदर्भसूची –

1) अस्ताना, रोहिताश्व. 'हिंदी गजलः उद्भव और विकास', नयी दिल्ली. सुनिल साहित्य सदन 2010, पृ.207.
2) डॉ.खराटे, मधु. 'साठोत्तरी हिंदी गजल', कानपुर. विद्या प्रकाशन, 2011. पृ.51.

3) अस्ताना, रोहिताश्व, 'हिंदी गजलः उद्‌भव और विकास' नयी दिल्ली. सुनिल साहित्य सदन 2010. पृ.209.
4) जायसवाल, संजय. 'अंग्रेजी राज और हिंदी साहित्य' कोलकता. आनंद प्रकाशन, पहला संस्करण 2012. पृ.144.
5) डॉ.मुजावर, सरदार. 'हिंदी की छायावादी गजल' नयी दिल्ली. वाणी प्रकाशन, 2007. पृ.30
6) – वहीं – पृ. 29.
7) – वहीं – पृ. 28.
8) अस्ताना, रोहिताश्व. 'हिंदी गजलः उद्‌भव और विकास', नयी दिल्ली. सुनिल साहित्य सदन, 2010. पृ.219.